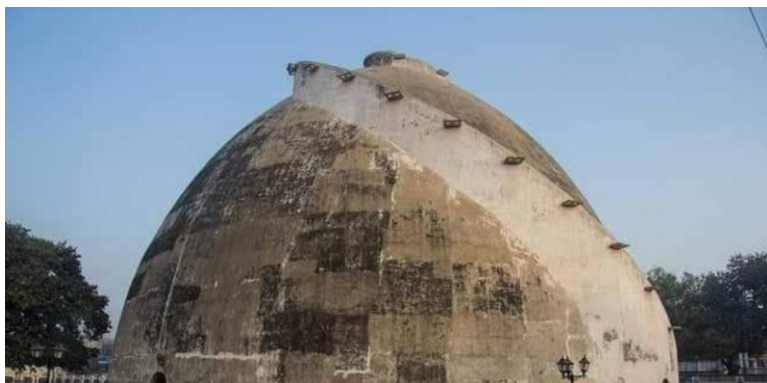


**गोलघर :- सम्राट असोक का समाधि  
स्थल**

**एक तथ्यपरक खोज**



**रवीन्द्र कुमार**

**एम. एससी: सांख्यिकी**

**पटना विश्वविद्यालय**

## गोलघर - सम्राट असोक का समाधि स्थल

दुनिया का महानतम सम्राट जिसने अपने शिलालेखों में अपने लिए देवों के प्रिय लिखवाते हैं। देवों के प्रिय सम्राट असोक ने अपने देव गौतम बुद्ध के 84,000 सुत्तों यानि वचनों के परिप्रेक्ष्य में इनके अस्थियों पर भारतीय उपमहाद्वीप में 84000 स्तूपों तथा चैत्यों का निर्माण एवं पुनर्निर्माण करवाये थे। सम्राट असोक के बेटे और बेटियों के परिनिर्वाण के बाद उनकी स्मृति में स्तूपों का निर्माण किया गया। महिन्द और संघमित्रा का समाधि स्थल श्रीलंका में है और एक बेटी चारुमती का समाधि स्थल नेपाल में आज भी मौजूद है। सम्राट असोक का एक और बेटा, जिसका नाम तिवर था, उसका समाधि सिरपुर, छत्तीसगढ़ में हैं। सम्राट असोक के सभी बच्चों की समाधि स्थल मिलती है, पर सम्राट असोक की समाधि स्थल लापता हैं, बहुत ही अचम्भा वाला बात है। क्या सम्राट असोक के समाधि स्थल के साथ बहुत बड़ा षड्यंत्र किया गया है? दुनिया के सबसे सुरक्षित जलदुर्ग पाटलिपुत्र के राजमहल की तरह क्या सम्राट असोक का समाधि स्थल को भी नष्ट कर दिया गया? दुनिया के महानतम सम्राट असोक का परिनिर्वाण के बाद उनकी स्मृति में समाधि स्थल का

निर्माण तो शत प्रतिशत हुआ ही होगा, क्योंकि सम्राट असोक के दादा सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य का भी समाधि स्थल कर्नाटक के श्रवणबेलगोला में मिलता है। स्तूप समाधि स्थल का प्रतीक है। इतिहास में खोजते हैं कि वहां सम्राट असोक का स्तूप मिलता भी है या नहीं।

चौथी सदी के अंत में चीनी यात्री फाह्यान भारत की यात्रा की थी, उसके यात्रा वृत्तांत में पाटलिपुत्र का जिक्र आया है और सम्राट असोक के स्तूप का जिक्र मिलता है। फाह्यान लिखते हैं कि अशोक के स्तूप के समीप महायान का एक संघाराम बना है। बहुत सुंदर और भव्य है। यहीं पर हीनयान का भी विहार है। सब में सात-आठ सौ भिक्षु निवास करते हैं। आचार-विचार, पठन-पाठन विधि दर्शनीय है। चारों ओर के संन्यासी श्रमण, विद्यार्थी, सत्य और हेतु (कारण) के जिज्ञासु इस स्थान का आश्रय लेते हैं। फाह्यान के समय सम्राट असोक का स्तूप पाटलिपुत्र में था, पर कहां पर स्थित था, उसका सही पोजीशन का वर्णन नहीं मिलता है। फाह्यान अपने यात्रा वृत्तांत में विमोक्ष स्तूप का वर्णन करता है। विमोक्ष स्तूप ऐसा धम्म स्तूप होता है जिसमें द्वार यानि दरवाजा हो, दरवाजे के माध्यम से अंदर

बाहर किया जा सके और उसमें यथासमय धातु (अस्थि अवशेष) रखी व उससे बाहर निकाली जा सके।

सातवीं सदी में आए ह्वेनसांग लिखते हैं कि प्राचीन नगर की दक्षिण पूर्व दिशा में संघाराम कुक्कुटाराम है, जिसे सम्राट असोक ने धम्म दीक्षा के उपरांत बनवाया था। संघाराम के पास आमलक स्तूप नाम का एक बहुत बड़ा स्तूप बना हुआ है। आंवला से संबंधित कहानी सम्राट असोक के जीवन से जुड़ी हुई हैं। रोगग्रस्त होने पर आंवला का सेवन करने से सम्राट असोक आरोग्य हो गये और दीर्घजीवन होने के अवसर पर सम्राट असोक ने अमलक स्तूप को बनवाये थे। इतिहासकारों ने **पटना के गोलघर की पहचान आमलक स्तूप** के रूप में की है। आमलक स्तूप के पश्चिमोत्तर में एक प्राचीन संघाराम के मध्य में एक स्तूप है। यह घंटा बजाने वाला स्तूप कहलाता है। पहले इस नगर में कोई 100 संघाराम था। 100 संघाराम की बातें भी सही प्रतीत होता है क्योंकि सम्राट असोक के समय में पाटलिपुत्र में उपगुप्त के नेतृत्व में तीसरी बौद्ध सम्मेलन हुआ था। सम्मेलन में आने वाले बौद्ध भिक्षुओं के रहने और ध्यान करने हेतु सम्राट असोक ने गोलघर के पश्चिम की ओर विहार और चैत्य बड़ी संख्या में बनवाये थे।

इसलिए हनेनसांग ने पाटलिपुत्र में 100 संघाराम का वर्णन करता है। हनेनसांग पुनः लिखते हैं कि प्राचीन राजभवन के उत्तर में और नरक के दक्षिण दिशा में एक बड़ी भारी पत्थर की नांद है। भिक्षु जब भोजन करने के लिए आमंत्रित किए जाते थे, तब यह नांद भोजन के काम आती थी। नरक से आप सहम मत जाइए, सम्राट असोक के समय में नरक जेल को कहा जाता था। जेल के अलावा भारतीय उपमहाद्वीप की सभी जगह स्वर्ग था। हमारे विचार से भोजन के काम आने वाला नांद वाला स्थल वर्तमान में पीरमुहानी होगा। पीर यानि भिक्षु अमलक स्तूप के आस पास बने संघाराम से भोजन हेतु असोक राजपथ का प्रयोग करते हुए पीरमुहानी तक आते होंगे। विशेष प्रयोजन को छोड़कर पीर यानि भिक्षु इसके आगे पूर्व की ओर शहर या राजमहल में नहीं जाते होंगे, इसलिए इस क्षेत्र का नाम पीरमुहानी पड़ गया। जिस स्थान पर भोजन के लिए पीर का मुंह आ जाए, उस स्थान को पीरमुहानी कह सकते हैं। पीर शब्द केवल मुस्लिम धर्म गुरु के लिए ही नहीं प्रयोग हुआ है बल्कि नाथ सम्प्रदाय के गुरुओं के लिए पीर शब्द का प्रयोग हुआ है, नाथ सम्प्रदाय बौद्ध संस्कृति से निकला एक सम्प्रदाय है

जिसमें 84 नाथों की एक लंबी परंपरा थी। भाषाविद डॉ राजेन्द्र प्रसाद सिंह लिखते हैं कि पीर का विकास स्थविर से हुआ है, थेर से हुआ है। नाथ लोग भी थेर थे। इसलिए गोरख नाथ के गुरु मत्स्येन्द्र नाथ को पीर कहा जाता है। गोरख नाथ के शिष्य गोगा जी को जाहर पीर कहा जाता है। नाथ पंथ के महान थेर रतन नाथ को पीर रतन नाथ कहा जाता है। पीर हैं तो मुस्लिम हों जरूरी नहीं है।

उपरोक्त वर्णन से एक बात साफ हो गई कि सम्राट असोक के समय में असोक राजपथ मौजूद थी। वर्तमान मंदिरी से लेकर भिक्खुओं के भोजनदान स्थल पीरमुहानी तक सड़क बनी होगी। जिस मार्ग से प्रतिदिन बौद्ध भिक्खु आवागमन करते हो, उसका नाम भी होना चाहिए। इसी मार्ग के बगल में गोलघर स्थित है। अब मैं उत्तरविहारट्ठकथा के बारे में बताना चाहूंगा। उत्तरविहारट्ठकथायं थेर महिन्द द्वारा रचित ग्रन्थ श्रीलंका और बर्मा जैसे देशों में श्रमण व थेरवादी परम्परा में प्रतिपादित ग्रन्थ है जिसका सम्पूर्ण ग्रन्थ अप्राप्त है। यहाँ पर इस ग्रन्थ के कुछ अंश बर्मा से पालि रोमन लिपि में प्राप्त अंशों का देवनागरी हिन्दी अनुवाद किया जा रहा है। इसके कुछ अंश इसी ग्रन्थ पर लिखे गए महावंस टिका से

मिलते जुलते हैं। इस ग्रन्थ की गाथा संग्रह से प्राचीन भारत के मोरिय (मौर्य) राजवंश पर तथा सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य व सम्राट अशोक के सम्बद्ध में आवश्यक जानकारी प्राप्त होती है। ऐतिहासिक दृष्टि से भी यह पालि ग्रन्थ महत्वपूर्ण है। महावंस एक प्राचीन पालि ग्रंथ है, जिसका शाब्दिक अर्थ महान वंश का इतिहास है। महावंस ग्रन्थ की रचना महानाम के नामक भिक्षु ने सिंधल द्वीप (श्रीलंका) में किया था। महावंस ग्रन्थ से हमें पता चलता है की यह ग्रन्थ उत्तरविहारट्ठकथायं नामक पालि ग्रन्थ की टीका भाष्य है। उत्तरविहारट्ठकथा का अनुवाद पाली भाषा के जानकार सिद्धार्थ वर्धन सिंह ने किया है। नीचे लिखें गाथा इसी ग्रंथ से है।

महापवण्या ते छुट्ठ मस्सानं अच्चयेन,

धम्मिको राजनो परिनिब्बोतो 'ति ।

इसिमहापथ चक्कवतिस्स असोको,

धम्मरजो धम्मराजिक थूपं कारोति ॥

महापूर्णिमा के छः माह पश्चात् अर्थात् कार्तिक पूर्णिमा को धर्मराज अशोक परिनिवृत्त को प्राप्त हुए। चक्रवर्ती राजा

असोक के शरीर अस्थियों पर ऋराजमार्ग (इसिपट्टनम) में धर्मराजा का धर्मराजिक स्तूप निर्माण कराया गया।

अनुवादक सिद्धार्थ वर्धन सिंह ने इसिमहापथ को ऋराजमार्ग अनुवाद किया और इसिमहापथ को इसीपट्टन (सारनाथ) के साथ जोड़ दिया है। इसिपट्टनम सारनाथ का प्राचीन नाम है। इसिमहापथ का मतलब इसि का महापथ होना चाहिए। इसि का सही व्याख्या या अर्थ जानने का प्रयास मैंने किया है। इसिपट्टनम, इसिमार्ग और इसिवर शब्द के निर्माण इसि से हुआ है। इसि शब्द में " इस " का प्रयोग है और "इस " शब्द से इस्लाम, ईश्वर, ईसाईयत भी बना है। "इस" शब्द का और विश्लेषण कीजिए तो जो आपकी इन्द्रियों के नजर में हो, वह " इस " से संबोधित होगा और जो आपकी इन्द्रियों के नजर से परे हो, वह " उस से संबंधित किया जाता है। जो इन्द्रियों की नजर में है, वह लौकिक है। जो लोग लौकिकता में विश्वास करते हैं उसे ही इसि कहा जाता है और जहां ऐसे लोग रहते थे, उस क्षेत्र को इसिपट्टनम कहा गया। लौकिक संस्कृति में विश्वास करने वाले लोग जिस मार्ग पर चलते थे, उस मार्ग को इसिमार्ग कहा गया। पटना का अशोक राजपथ को सम्राट असोक के समय में इसिमार्ग कहा जाता



था। मंदिरी स्थित संधाराम से बौद्ध भिक्षु भोजन करने के लिए पीरमुहानी (पीर बौद्ध भिक्षुओं को कहा जाता था) तक इसिमार्ग को पकड़ कर आते थे। इसियों में सर्वश्रेष्ठ को इसिवर कहा गया है। यहां पर इसि अर्थ बौद्ध भिक्षु भी निकलता है। बुद्ध का दर्शन लौकिक दर्शन है। लौकिक संस्कृति में विश्वास करने वालों में जो सर्वश्रेष्ठ होगा, वह इसिवर कहलाया। यदि आप लौकिक संस्कृति को मानते हैं, तो इसि का मतलब भिक्षु ही निकल रहा है। इस यानि लौकिक संस्कृति को मानने वाले लोग यानि फौज को इस्लाम कहा गया है। बौद्ध दर्शन के सुन्नवाद को हज़रत मुहम्मद साहब ने अपनाया, इसलिए मुहम्मद साहब के अनुयाई सुन्नी कहे गए। मुहम्मद साहब कहा करते थे कि मुझे भारत से ईश्वरीय सुगंध मिलती है। मुहम्मद साहब के ईश्वर भारत में कौन था। गौतम बुद्ध ही मुहम्मद साहब के ईश्वर थे। इसलिए इसियों ( बौद्ध भिक्षु ) में सर्वश्रेष्ठ को ईश्वर कहा गया था। आज भले ही ईश्वर का अर्थ अलौकिक शक्तियों से संबंधित हो गया है, पर प्राचीन भारत में ईश्वर गौतम बुद्ध को संबोधित किया गया था। लौकिक संस्कृति में विश्वास करने वाले लोगों को इसि कहा गया है। इसिमहापंथ का अर्थ भिक्षुओं का महामार्ग

होगा और हमारी व्याख्या से पूर्णतया मेल भी खा रही है। इतना स्पष्ट है कि सम्राट असोक का समाधि स्थल राजमार्ग पर स्थित था। साथ ही साथ यह भी स्पष्ट है कि सम्राट अशोक का समाधि स्थल को स्तूप के रूप में बनाया गया था जिसे सम्राट असोक के पुत्र थेर महिन्द ने खुद लिखा है। फाह्यान, ह्वेनसांग की यात्रा वृत्तांत के साथ इसको मिलाया जाय, तो स्पष्ट है वर्तमान समय में भी पटना स्थित गोलघर असोक राजपथ पर स्थित है, इसलिए **वर्तमान का गोलघर ही सम्राट असोक का समाधि स्थल है।**

यह तो साहित्य और यात्रावृत्तांत की बात हो गई, अब गोलघर की पुरातात्विक, ऐतिहासिक और वास्तविक स्थिति का वर्णन करना भी जरूरी है।

विकिपीडिया गोलघर के बारे में लिखता है कि गोलघर, [बिहार प्रांत](#) की राजधानी [पटना](#) में [गाँधी मैदान](#) के पश्चिम में स्थित है। 1770 में आई भयंकर सूखे के दौरान लगभग एक करोड़ लोग भुखमरी के शिकार हुए थे। तब के गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग ने गोलघर के निर्माण की

योजना बनाई थी, ब्रिटिश इंजिनियर कप्तान जॉन गार्स्टिन ने अनाज़ के (ब्रिटिश फौज के लिए) भंडारण के लिए इस गोल ढाँचे का निर्माण 20 जनवरी 1784 को शुरू करवाया था। इसका निर्माण कार्य [ब्रिटिश राज](#) में [20 जुलाई 1786](#) को संपन्न हुआ था। इसमें एक साथ 140000 टन अनाज़ रखा जा सकता है। इसका आकार 125 मीटर और ऊँचाई 29 मीटर है। इसमें कोई स्तंभ नहीं है और इसकी दीवारें आधार में 3.6 मीटर मोटी हैं। गोलघर के शिखर पर लगभग तीन मीटर तक ईंट की जगह पत्थरों का प्रयोग किया गया है। गोलघर के शीर्ष पर दो फीट 7 इंच व्यास का छिद्र अनाज डालने के लिये छोड़ा गया था, जिसे बाद में बंद कर दिया गया। यहां आयताकार या वर्गाकार घेरा स्तूप के ऊपर दिखाई देता है। स्तूप की भाषा में इसे हरमिका कहा जाता है। हरमिका शब्द का शाब्दिक अर्थ जहां आराम करने का जगह हो, होता है। हरमिका के ठीक नीचे जमीन पर सम्राट असोक का अस्थि अवशेष आराम कर रहा है। स्थापत्य का अदभुत नमूना है गोलघर। गुम्बदाकार आकृति के कारण इसकी तुलना 1627-55 में बने [मोहम्मद आदिल शाह](#) के मकबरे से की जाती है। इस

प्रकार की संरचना स्तूप की ही होती है और स्तूप हमारे समाज के महापुरुषों की समाधि स्थल या स्मारक है।

अनाज भंडारण के लिए इस गोलघर का निर्माण 20 जुलाई 1786 को पूरा हुआ। बनने के बाद ही इसकी कमियां सामने आने लगीं। दरवाजे भीतर की ओर खुलते हैं, सो इसे कभी पूरा भरा नहीं जा सकता। वहीं गर्मी के कारण इसमें अनाज जल्दी सड़ जाता था। लिहाजा यहां कभी अनाज संग्रह हो ही नहीं सका। अंग्रेजों इसे गास्टीन की मूर्खता करार दिया। फिर भी यह अनोखी आकृति के कारण लोकप्रिय बना हुआ है। लोग कहते हैं कि गोलघर अनाज रखने के लिए बनाया गया था। अनाज गोदाम की दृष्टि से इस संरचना में एक दो कमी नहीं है, अनेक कमियां पाई गई है। जैसे दरवाजे अंदर की ओर खुलना, दरवाजों का बहुत ही छोटा होना, अनाज भंडारण अनाज को ऊपर ले जाकर छेद के माध्यम से नीचे गिराना। सब बेवकूफ बनाने के चोंचले हैं। अनाज बिना बोरे में रखना और दरवाजा अंदर की ओर खुलना, क्या आपको लगता है कि अंग्रेज इतने बड़े बेवकूफ थे। एक बात आप जान लें कि अंग्रेजों के समय में भारत में जितनी भी जगह खुदाई की गई, उसका आधार हवेनसांग का यात्रा वृत्तांत रहा है।

इतना पता है अंग्रेजों ने भारत की प्राचीन सनातन संस्कृति या बौद्ध संस्कृति को विश्व के पटल पर बहुत ही मजबूती से उभार दिया। तो क्या ऐसा भी हो सकता है कि ध्वसावशेष सम्राट असोक की समाधि स्थल को अंग्रेजों ने पुनर्निर्माण कर दिया हो? अंग्रेजों द्वारा पुनर्निर्मित समाधि स्थल को हमारे पूर्वजों ने गोलघर कहा, जो शब्द संरचना के हिसाब से सही भी है। पता नहीं किस आधार पर इसे अनाज के गोदाम के रूप में प्रचलित किया गया।

ऐसा भी नहीं है कि भारत में गोलघर जैसी संरचना प्राचीन भारत में नहीं मिलती हो, बहुत मिलती है। गोलघर नाम से स्तूप जैसी संरचना भारत में अनेक जगह मिलती है। अलीगढ़ में गोलघर नाम से काफी प्रसिद्ध स्थल है और वहां पर बहुत ही पुराना जमाने का एक स्तूप जैसी संरचना बना हुआ है। हजारीबाग का एक कस्बा का नाम गोला है जहां ग्राम खीरी में बौद्ध स्तूप हैं। यहां के स्थानिक लोग बौद्ध स्तूप को खीरी मठ नाम से जानते हैं। भाषाविद डॉ राजेन्द्र प्रसाद सिंह लिखते हैं कि पटना का गोलघर बौद्ध स्तूप जैसा है। इतिहास के नीचे इतिहास, गोलघर के आसपास की खुदाई में मौर्यकालीन अवशेष मिले हैं। जब 1784 ई में मेरा निर्माण/पुनर्निर्माण किया जा रहा था तब

इस बात पर ध्यान नहीं दिया गया कि निर्माण स्थल के नीचे भी एक इतिहास है। पुरातत्व विभाग, बिहार सरकार के निदेशक अतुल वर्मा बताते हैं कि आजादी के बाद यहां की गई खुदाई में दूसरी और तीसरी शताब्दी के मृदभांड मिले थे। इसके अलावा मौर्यकालीन भी कई पुरावशेष प्राप्त किए गए हैं। इससे पता चलता है कि मौर्य कालीन सभ्यता का विस्तार ही गोलघर के रूप में है। आज एक बार फिर से सुरती और चूना के मिश्रण से मुझे संरक्षित किया जा रहा है। ताकि नई पीढ़ी के लोग भी हमारे इतिहास से अनभिज्ञ ना रहे। हो ना हो अंग्रेजों ने ख्याल रखा भी हो, आजाद भारत में मूलनिवासियों का गौरवशाली इतिहास के अवशेष को दफन करना शुरू कर दिया। दफन करने की अनेक उदाहरण दिया था सकता है। पाटलिपुत्र का राजदरबार दुनिया पर 1000 सालों तक राज किया, आज पुरातत्व विभाग ने उसको पार्क बनाकर रख छोड़ा है। कहीं ऐतिहासिक स्थल को ऐसे संजोए कर रखा जाता है।

महाजन के कथन के अनुसार सम्राट अशोक के समय जब नगर के विस्तार की जरूरत पड़ी तब उसने गंगा से सटे बांकीपुर से जहां गोलघर (प्राचीन अम्लक स्तूप) है,

दीघातक नया नगर बसाया था। ह्वेनसांग ने सम्राट अशोक के नए और पुराने शहर की चर्चा की है। फाहियान और हेन्सांग के अनुसार महाजन ने पाटलिपुत्र के नए नगर से दक्षिण पूर्व की ओर अम्लक स्तूप होने की बात की है और महाजन का मानना है की 232 Century BCE में सम्राट अशोक के मृत्यु के बाद इस स्तूप का निर्माण उनके अनुयायियों ने किया था। अरविन्द महाजन ने दावा किया है कि वास्तविक गोलघर एक चटानी ढांचा था, जिसे 1786 में John Garstin, ने अन्दर और बाहर से ईंटो से ढंक दिया। महाजन ने कहा है कि दिसंबर 1995 में गोलघर के आसपास की खुदाई में तीन अंगुलियों की छाप वाली मौर्यकालीन ईंटे साफ़ बताती है कि यह मौर्यकालीन स्तूप ही है जो सम्राट अशोक के स्मृति में बनवाया गया है। इन सभी बातों को ठोस प्रमाणों पर विस्तार से शांतिस्वरूप बौद्ध और डॉ. विमलकीर्ति ने दीक्षाभूमि किताब में वर्णन किया है।

गोलघर नाम भी अपनी कहानी खुद कह रही है। गो शब्द का अर्थ बौद्ध भिक्षु होता है। गो का अर्थ भिक्षु पहली- दूसरी सदी के आस पास का है। बाद के सदियों में गो का अर्थ गाय या पशु के अर्थ में प्रयोग हुआ। यह

शब्दों के अर्थ का अपकर्ष है। भदन्त आनन्द कौसल्यायन की पालि-हिंदी कोश में गोचरगाम का अर्थ भिक्षाटन क्षेत्र मिला। भिक्षाटन गाय बैल तो करेगा नहीं। इससे यह साबित होता है कि गो का अर्थ बौद्ध भिक्खु या भिक्खुणी था। संस्कृत में छह को षठ या षट कहा जाता है। गो का अर्थ गाय बैल हैं तो गोष्ठी का मतलब छह गाय बैल का बैठक होना चाहिए। गोष्ठी का सही मतलब छह भिक्खुओं या विद्वानों का बैठक होता है, इसलिए गो का सही अर्थ भिक्खु या विद्वान भी होगा। गो उपसर्ग लगाकर सैकड़ों शब्द देखने को मिलता है। गो का अर्थ भिक्खु करने से सभी शब्दों का शाब्दिक अर्थ मिला और सभी के सभी शब्द बौद्ध संस्कृति की ओर इंगित कर रहे हैं। गो का अंधेरा ( तम ) दूर करने वाला गोतम, गो में सर्वश्रेष्ठ गोवर, गो का वर्धन करने वाला गोवर्धन, गो का हिफाजत करने वाला गौरैया, गो में बिन ( सुन्नवाद ) का ज्ञाता गोबिंद, गो को रखने वाला नाथ गोरखनाथ ( नाथ सम्प्रदाय बौद्ध संस्कृति से निकला सम्प्रदाय है ), गो का रहने वालास्थान गोपुरम कहा जाता है। दक्षिण भारत में मंदिर के गर्भगृह को गोपुरम कहा जाता है और गोपुरम में गाय



बैल नहीं रहता है, बल्कि भिक्षु का मूर्ति स्थापित है। मंदिर के देखरेख वाली समिति को गोष्ठिक कहा जाता है।

गो का अर्थ भिक्षु है। गौतम बुद्ध ने बहुजन कल्याण हेतु एक स्थान से दूसरे स्थान चारिका करने का आदेश दिया था, भिक्षु के चारिका को लैटिन में गो का अर्थ हो गया, एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। गो के मरने पर मिट्टी थोपकर जो आकार बनाया गया, उस आकार को गोला कहा गया।

गो का अर्थ भिक्षु के परिप्रेक्ष्य में गोलघर को देखने की जरूरत है। जब किसी शब्द के अंत में “ ल “ प्रत्यय लगता है तो वह शब्द “वाला” या “से संबंधित” का अर्थ देता है, जैसे मांसल शरीर ( मांस वाला शरीर )। गोल या गोला शब्द भिक्षु से संबंधित है। गोल और गोला नाम से भारत में कई जगहों का नाम मिलता है, जो किसी भी सूरत में आकार में sphere नहीं है। पटना में गोलघर के अलावा दरियापुर गोला, गोला रोड स्थान का नाम है। सम्राट असोक के दादा सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य का समाधि स्थल का नाम श्रवणबेलगोला में गोला लगा है। उत्तर प्रदेश में विधानसभा क्षेत्र का नाम गोला गोकर्णनाथ है। हजारीबाग में गोला कस्बा का नाम है। प्राचीन समय में

यह सभी स्थल भिक्खुओं से संबंधित होगा। पटना का गोलघर को इसी परिप्रेक्ष्य में लेने की जरूरत है ताकि अनाज के गोदाम के रूप में। गोलघर का अर्थ भिक्खु वाला घर या भिक्खु से संबंधित घर है। पूर्वजों द्वारा दिया नाम गोलघर खुद बता रहा है कि मैं विमोक्ष स्तूप हूं, कोई अनाज भंडार नहीं। इसलिए इसकी संरचना स्तूप जैसी ही है और हवेनसांग और फाहयान के विवरण से भी मेल खा रहा है और लोक संस्कृति भी अपने सम्राट को भिक्खु जैसा आचरण रखने के कारण गोलघर के रूप में अपने जेहन में रखा है। धूर्तों ने शब्दों का अर्थ बदल बदल कर भारत की संस्कृति और इतिहास को मटियामेट करने का प्रयास किया था और सफल भी रहा है। अलबेरुनी ने सही ही लिखा था कि भारतीय उपमहाद्वीप में एक ही नाम की दो पाण्डुलिपि के अंदर की सामग्री में काफी विभिन्नता देखने को मिलती है।

निष्कर्ष यह है कि **गोलघर दुनिया के महानतम सम्राट असोक की समाधि स्थल है।** यह विमोक्ष स्तूप का उदाहरण है। यह फाहयान और हवेनसांग की यात्रा वृत्तांत से भी प्रमाणित है। गोलघर के आस पास मिले सामग्री मौर्यकालीन है। गोलघर नाम खुद प्रमाणित कर रहा है कि

में भिक्खुवाला घर हूं। बिहार सरकार से अनुरोध है कि भारत के महानतम सम्राट असोक के समाधि स्थल को विश्व में पहचान दिलायें। साथ ही साथ पटनावासियों से अनुरोध है कि सरकार पर दबाव डालकर विश्व धरोहर घोषित करवाये ताकि पटना में विश्व पर्यटन को बढ़ावा मिले। जो जो समाज सम्राट असोक को अपना पूर्वज मानते हैं, वह सम्राट असोक के विचार से प्रेरित हों।

( खोज जारी है, अगर किन्हीं के पास कुछ और प्रमाण है तो मुझे प्रदान करने का कष्ट करें)

रवीन्द्र कुमार, मोबाइल नंबर 9935250285